11

प्राथमिक स्तर पर आँगनबाड़ी के माध्यम से विद्यालयों में प्रवेश लेने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शिखा चतुर्वेदी*

स्वतंत्रता के बाद से ही प्राथमिक स्तर की शिक्षा में सुधार के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। चूँकि प्राथमिक शिक्षा ही बच्चे की बुनियादी शिक्षा होती है जिसके आधार पर वह उच्च शिक्षा रूपी भवनों का निर्माण कर सकता है। इस स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना भारत सरकार की प्राथमिकता रही है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा में सुधार हेतु सरकार द्वारा और प्रबल कदम उठाए जाने की ज़रूरत है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों में जो बच्चे आँगनबाड़ी में पढ़ने के पश्चात प्रवेश लेते हैं उनकी उपलब्धि सीधे प्रवेश लेने वालों बच्चों की तुलना मे कम होती है या ज़्यादा? इस समस्या के लिए इन बच्चों का न्यादर्श की रैंडम न्यादर्श विधि का प्रयोग करके उनकी शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाया है जिसके लिए सांख्यिकी की टी-परीक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

शोध की पृष्ठभूमि

शिक्षा समाज का दर्पण है। बच्चों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः प्रत्येक समाज का यह दायित्व होता है कि वह अपने बच्चों के लिए अच्छी प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था करे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रयासों को पर्याप्त गंभीरता से लिया गया है और देश की पंचवर्षीय योजनाओं में समुचित प्रावधान किए गए हैं। भारत के संविधान में नीति-निर्देशक सिद्धांतों के अंतर्गत 45वें अनुच्छेद में 14 वर्ष तक के बच्चों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई थी। पुनः 28 नवंबर 2002 को 86वाँ संविधान संशोधन विधेयक पारित कर 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा को उनके मौलिक अधिकार के रूप में 21(ए) के तहत घोषित कर दिया गया (यादव, 2012)।

सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.) की वार्षिक रिपोर्ट (2017) के अनुसार केंद्र सरकार द्वारा सन् 2001 से एक देशव्यापी कार्यक्रम 'सर्व शिक्षा अभियान' के नाम से चलाया जा रहा है जो सभी बच्चों को शिक्षा के समान अवसर देने के साथ-साथ समुदाय-आधारित एक समग्र कार्यक्रम है जिसमें शैक्षिक गतिविधियों को सूक्ष्म एवं विस्तृत दोनों स्तरों पर सुनिश्चित किया गया है।

*विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

एस.एस.ए. का उद्देश्य 2010 तक 6–14 वर्ष के आयु वर्ग वाले सभी बच्चों को उपयोगी एवं प्रासंगिक प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना है। एस.एस.ए. के तीन मुख्य लक्ष्य हैं जो इस प्रकार हैं—

- 2005 तक सभी स्कूलों, शिक्षा गारंटी योजना केंद्रों, ब्रिज सेतु पाठ्यक्रम में 6–14 वर्ष के आयु वर्ग के समस्त बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना।
- सभी प्रकार के जेंडर एवं सामाजिक भेदभाव को प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर वर्ष 2007 तक तथा 2010 तक बुनियादी शिक्षा के स्तर पर समाप्त करना।
- 2010 तक सभी के लिए शिक्षा (भोवी और पंडित, 2017)।

समेकित बाल विकास योजना अथवा आँगनबाड़ी

स्वतंत्रता के उपरांत देश में बाल विकास पर विशेष महत्व दिया गया। प्रथम योजना काल से ही बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, कल्याण तथा मनोरंजन की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए विभिन्न विभागों तथा कार्यक्रमों या परियोजनाओं द्वारा लक्ष्य निर्धारित किए गए। बच्चों के विकास तथा कल्याण के कार्यक्रम तथा परियोजनाएँ मुख्यतः कल्याण विस्तार परियोजनाएँ थीं, जैसे— एकीकृत बाल कल्याण हेतु प्रदर्शन परियोजनाएँ, परिवार एवं बाल कल्याण परियोजनाएँ, अनुपूरक पोषाहार कार्यक्रम तथा विशेष पोषाहार कार्यक्रम आदि। आँगनबाड़ी के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

- 0–6 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के पोषण तथा स्वास्थ्य स्थिति में सुधार करना।
- मृत्युदर, कुपोषण तथा स्कूल छोड़ने की दरों में गिरावट लाना।
- बाल विकास हेतु विभिन्न नीति एवं क्रियान्वन के मध्य संयोजन को प्राप्त करना।
- उचित पोषण तथा स्वास्थ्य शिक्षा द्वारा बच्चों की पोषण आवश्यकताओं तथा उनके सामान्य स्वास्थ्य की देखभाल हेतु गर्भवती तथा धात्री महिलाओं की क्षमता में वृद्धि करना।

समेकित बाल विकास सेवा योजना (आई.सी.डी.एस.) 2 अक्तूबर, 1975 को देश के 33 विकास खण्डों में लागू की गयी थीं। उत्तर प्रदेश में यह परियोजना तीन विकास खण्डों — (1) शंकर गढ़ (इलाहाबाद), (2) डलमऊ (रायबरेली) तथा (3) अलीगढ़ में स्थापित की गई थी।

शोध की आवश्यकता

शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। मानव विकास का मूल साधन है। आज प्रायः सभी समाजों में शिक्षा को प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और विशिष्ट वर्गों में बाँटा गया है और उनमें प्रत्येक वर्ग की शिक्षा का अपना महत्व है। अभी भी भारत में कई ऐसे क्षेत्र हैं, दूरदराज़ इलाके हैं, जहाँ विद्यालय क्रम टूटने का सिलसिला निरंतर जारी है। इन क्षेत्रों में आँगनबाड़ी व्यवस्था को लागू करना विद्यालय क्रम के सिलसिले को जोड़े रखने की दिशा में सार्थक कदम है। इसके लिए बड़े सुव्यवस्थित और सुसंगठित तरीके से आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

शोध का परिसीमन

यह शोध कार्य प्रारंभिक विद्यालय में पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों पर किया गया है।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ मानी गयी हैं—

1. सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी कार्यक्रम द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों के भाषा ज्ञान का स्तर उत्तम है।
2. सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी कार्यक्रम द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की गणितीय अभियोग्यता का स्तर उत्तम है।
3. सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी कार्यक्रम द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों के सामान्य ज्ञान का स्तर उत्तम है।

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

शोध पत्र के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोध की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है। न्यादर्श का निर्धारण यादृच्छिक प्रविधि की सहायता से किया गया, जिसमें बुलंदशहर के लखावटी ब्लॉक के चार-चार प्राथमिक विद्यालयों को चुना गया था। प्रदत्तों के संकलन के लिए स्वनिर्मित शोध उपकरण 'प्राथमिक स्तर पर बच्चों का उपलब्धि परीक्षण' को इन प्राथमिक विद्यालयों में प्रशासित किया गया तत्पश्चात प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति के आधार पर सांख्यिकी की टी-परीक्षण का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किए।

परिणाम एवं निष्कर्ष

परिकल्पना 1— सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी कार्यक्रम द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों के भाषा ज्ञान का शैक्षिक स्तर उत्तम है।

तालिका 1

प्राथमिक स्तर पर प्रवेशित बच्चे	बच्चों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-परीक्षण (t)
सीधे प्रवेशित विद्यार्थी	42	5.0	2.18	8.69*
आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेशित विद्यार्थी	44	10.0	3.09	df ~ 84

*सार्थकता स्तर 0.01

तालिका 1 के अवलोकन से यह विदित होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सीधे प्रवेशित बच्चों का मध्यमान 5.0 एवं मानक विचलन 2.18 प्राप्त हुआ है। इसी स्तर पर आँगनबाडी द्वारा प्रवेशित बच्चों का मध्यमान 10.0 तथा मानक विचलन 3.09 प्राप्त हुआ है। प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सीध प्रवेशित बच्चे तथा आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेशित बच्चों के सांख्यिकी मानों में उच्च स्तरीय सार्थकता ($t=8.69$, $p<0.01$) प्राप्त हुई है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों के भाषा ज्ञान का शैक्षिक स्तर उत्तम पाया गया है।

परिकल्पना 2— सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी कार्यक्रम द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की गणितीय अभियोग्यता का शैक्षिक स्तर उत्तम है।

तालिका 2

प्राथमिक स्तर पर प्रवेशित बच्चे	बच्चों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-परीक्षण (t)
सीधे प्रवेशित विद्यार्थी	42	3.5	1.65	4.40*
आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेशित विद्यार्थी	44	5.0	1.50	df ~ 84

*सार्थकता स्तर 0.01

तालिका 2 के निरीक्षण से पता चलता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सीधे प्रवेशित बच्चों का मध्यमान 3.5 एवं मानक विचलन 1.65 प्राप्त हुआ है। इसी स्तर पर आँगनबाडी द्वारा प्रवेशित बच्चों का मध्यमान 5.0 तथा मानक विचलन 1.50 प्राप्त हुआ है। प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सीधे प्रवेशित बच्चे तथा आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेशित बच्चों के सांख्यिकी मानों में उच्च स्तरीय सार्थकता ($t=4.40, p<0.01$) प्राप्त हुई है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की गणितीय अभियोग्यता का शैक्षिक स्तर उत्तम पाया गया है।

परिकल्पना 3— सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी कार्यक्रम द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की सामान्य ज्ञान अभियोग्यता का शैक्षिक स्तर उत्तम है।

तालिका 3 के निरीक्षण से पता चलता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सीधे प्रवेशित बच्चों का मध्यमान 7.0 एवं मानक विचलन 3.60 प्राप्त हुआ है। इसी स्तर पर आँगनबाडी द्वारा प्रवेशित बच्चों का मध्यमान 11.5 तथा मानक विचलन 3.04 प्राप्त हुआ है। प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि प्राथमिक विद्यालयों में सीधे प्रवेशित बच्चों तथा आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेशित बच्चों के सांख्यिकी मानों में उच्च स्तरीय सार्थकता ($t=6.24, p<0.01$) प्राप्त हुई है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की सामान्य ज्ञान अभियोग्यता का शैक्षिक स्तर उत्तम पाया गया है।

निष्कर्ष एवं व्याख्या

1. परिणामों के सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर यह जानकारी प्राप्त हुई है कि सीधे प्रवेश लेने वाले पाँचवीं कक्षा के बच्चों की आँगनबाड़ी

तालिका 3

प्राथमिक स्तर पर प्रवेशित बच्चे	बच्चों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	टी-परीक्षण (t)
सीधे प्रवेशित विद्यार्थी	42	7.0	3.60	6.24*
आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेशित विद्यार्थी	44	11.5	3.04	df ~ 84

*सार्थकता स्तर 0.01

के उपरांत प्रवेश लेने वाले बच्चों से अध्ययन में थोड़ी कम रुचि है।

2. आँगनबाड़ी से प्रवेश लेने वाले बच्चों की अध्ययन में अधिक रुचि है एवं वे अपनी पूर्व स्कूली शिक्षा के आधार पर प्राथमिक विद्यालय में आने के पश्चात अपनी पूर्व शिक्षा को प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा से जोड़ने के पश्चात विषय को भली-भाँति समझ पाते हैं।
3. आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों को पूर्व से ही अक्षर ज्ञान, सामान्य गणितीय आदि का ज्ञान लगभग हो जाता है, जिससे उनको प्राथमिक विद्यालय में अधिक सहायता मिलती है।
4. आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों में सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में विद्यालय प्रतिदिन जाने के प्रति अधिक लगनशीलता होती है।
5. प्राथमिक विद्यालय में आँगनबाड़ी द्वारा पंजीकृत बच्चों के दाखिला लेने की वजह से नामांकन में बढ़ोत्तरी होती है।
6. आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों के भाषा ज्ञान का स्तर अक्सर निम्न पाया गया।
7. आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की गणितीय अभियोग्यता का स्तर सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में उत्तम पाया गया है।
8. आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चे सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों की तुलना में अधिक क्रियाशील प्रतीत होते हैं।
9. आँगनबाड़ी कार्यक्रम की भूमिका का प्राथमिक विद्यालय में बच्चों के नामांकन हेतु धनात्मक प्रभाव पड़ता है।
10. आँगनबाड़ी द्वारा प्रवेश लेने वाले बच्चों की सभी विषय को पढ़ने एवं समझने में अधिक रुचि होनी है।

अतः इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो बच्चे आँगनबाड़ी में पढ़ने के पश्चात प्राथमिक विद्यालय मे प्रवेश लेते हैं उनकी उपलब्धि सीधे प्रवेश लेने वाले बच्चों से अधिक होती है। यह कहा जा सकता है कि आँगनबाड़ी शिक्षा प्रणाली बच्चों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि करने के लिए एक सकारात्मक उपकरण है और उनके शैक्षिक जीवन की शुरुआत के लिए एक बेहतरीन व स्वस्थ पहल है।

संदर्भ

भोवी, मंजुला और पंडित. 2017. ए स्टडी ऑन परफोर्मेन्स ऑफ़ सर्व शिक्षा अभियान इन इंडिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस एजुकेशन एंड रिसर्च*. वॉल्यूम 2. अंक 2. पृ.सं. 78–80. गुप्ता पब्लिकेशनस, रोहिणी, दिल्ली.

यादव, राज. 2012. *राइट टू एजुकेशन इन इंडिया: ए स्टडी*. http://ssrn.com/abstract=2014933 से लिया गया।